10

बच्चों से बातचीत एक अनुभव

विजय प्रकाश जैन*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 शिक्षा को बाल केंद्रित बनाते हुए बच्चों में रटने के स्थान पर उनके परिवेश और अनुभवों को जोड़ते हुए उनकी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने पर जोर देती है। इसके लिए बच्चों के साथ बातचीत को बढ़ावा देना आवश्यक है। प्रस्तुत लेख में शिक्षक बच्चों के साथ चर्चा करते हुए बच्चों को उनकी दुनिया के बारे में सोचने, सवाल करने और अपने तर्कों को विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। यदि हम बच्चों को उनके परिवेश और अनुभवों के साथ जोड़कर पढ़ाते हैं, तो यह न केवल उनके ज्ञान को बढ़ाता है, बल्कि उनमें सोचने और समझने की क्षमता भी विकसित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की मूल विचारधारा पठन-पाठन की शिक्षक केंद्रित व्यवस्था के स्थान पर बाल केंद्रित करने की व्यवस्था पर आधारित है। इसके अंतर्गत बच्चों की रचनात्मक क्षमता के विकास पर ध्यान देकर उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाना है। यह शिक्षा नीति बच्चे को भय, अवसाद और चिंता से मुक्त करने की बात करती है तथा उन्हें उनके विचारों को खुलकर अभिव्यक्त करने पर जोर देती है, ताकि उनमें जानकारी को समझकर उसे ग्रहण करने तथा व्यवहार में लाने की क्षमता का विकास हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बच्चों के साथ उनके परिवेशीय अनुभवों पर उनकी भाषा में की जाने वाली सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ, साक्षरता और अंक ज्ञान जैसी बुनियादी विधाओं के साथ ही विश्लेषणात्मक सोच और समस्या समाधान जैसे उच्च कौशलों को विकसित करने पर बल देती है।

इसके लिए आवश्यक है कि हमारी कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ पाठ को पढ़ाने, उसके प्रश्नों को श्यामपट्ट पर हल करवाने और रटकर याद रखने के स्थान पर विवेचनात्मक सोच, वैज्ञानिक स्वभाव और गतिविधि-आधारित शिक्षण पर आधारित होनी चाहिए। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक आधारित इस शिक्षण व्यवस्था में बच्चे की परिवेशीय अनुभवजन्य शिक्षा को शामिल करने के विभिन्न तरीकों को खोजने की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षक को अपने स्तर पर बच्चों की आर्थिक, सामाजिक और भाषायी परिस्थितियों को देखते

**प्रधानाध्यापक*, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मेंदिया डिण्डोर, वीरपुर, बाँसवाड़ा, राजस्थान 327 001

हुए, तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेकर गतिविधियों का सृजन करना होगा तथा बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं पर काम करना होगा।

राजस्थान के दक्षिण में स्थित बाँसवाड़ा जिले के मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेंदिया डिण्डोर में स्थित है। इस विद्यालय में अध्ययन करने वाले समस्त विद्यार्थी आदिवासी भील समुदाय के हैं। इनके अध्ययन में आर्थिक तंगी के साथ ही पढ़ने का वातावरण और मुद्रित-लिखित सामग्री का न होना रूकावट डालता रहता है। लेखक पिछले 8 वर्षों से इस विद्यालय में कार्यरत है और इस लेख के माध्यम से अपने अनुभव साझा कर रहा है।

बच्चों के साथ बातचीत के दौरन प्राप्त हुए अनुभव इस प्रकार थे—

स्कूल के अंतिम कालांश में अक्सर बच्चे थक जाते हैं और उनका ध्यान छुट्टी की घंटी पर लगा होता है। लगभग यही स्थिति शिक्षकों की भी होती है। इसलिए अधिकांशत स्कूल का अंतिम कालांश सह-शैक्षिक गतिविधियों का होता है। आज भी कुछ ऐसा ही था, बच्चे व्यग्रता से छुट्टी का इंतज़ार कर रहे थे। स्कूल के पाँच शिक्षक साथियों में से कोई भी विद्यालय में उपस्थित नहीं था तो मैंने कक्षा 1–8 तक के बच्चों को बुलाया और उनके साथ स्कूल के बरामदे में बैठ गया। बच्चे बोले—"सर क्या करें?" मैंने कहा— "आओ बात करते हैं।"

मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था कि बच्चों से क्या बात करूँ? मैं इसी सोच में ही था कि तभी कक्षा 6 का अशोक बोला— "सर विद्यालय पर रंग करवा दीजिए।" मेरे पूछने पर जीतू ने बताया कि सर स्कूल गंदा लग रहा है। वास्तव में विद्यालय पर रंग हुए दो साल हो चुके थे और दीवारें बदरंग हो चुकी थीं। (चर्चा राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य जिले बाँसवाडा के मेंदिया डिण्डोर के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के साथ उनकी स्थानीय भाषा बागड़ी मिश्रित हिंदी में हो रही थी।)

उनकी बात तो सही थी, परंतु जब मैंने पूछा कि पैसा कहाँ से आएगा तब उसके जवाब में कक्षा 5 का सुभाष बोला "सर नोतरा रख लेते हैं। नोतरा आदिवासी समाज में शादी में, मकान बनाने पर या अन्य किसी परिस्थिति में एक-दूसरे का सहयोग करने की परंपरा को कहते हैं।" थोड़ी देर पहले मैं यह सोच रहा था कि बच्चों से क्या बात करूँ, लेकिन बच्चों के साथ चर्चा की शुरुआत हो चुकी थी, परंतु इस चर्चा की अभी कोई दिशा तय नहीं थी।

मैंने बच्चों से पूछा "स्कूल के नोतरे में पैसे कौन देगा?" तभी दो-तीन बच्चे एक-साथ बोल पड़े कि सर पैसे हमारे पिताजी दे देंगे। पर जब तुम्हारे यहाँ नोतरा होगा तो हम कहाँ से देंगे? इस पर गिंदू बोली "सर स्कूल नहीं देगा तो क्या हुआ हम देंगे न हम इस स्कूल में पढ़ते भी तो हैं।" कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों के जेहन में यह बात थी कि जब हम इस स्कूल में पढ़ते हैं तो इस स्कूल को सही रखने की जिम्मेदारी भी हमारी ही है। इस चर्चा के बाद स्कूल में नोतरा रखा गया और अठारह हजार रुपये एकत्र कर स्कूल का रंग रोगन करवाया गया।

बच्चों से फिर एक प्रश्न पूछा गया कि नोतरा तो रात में होता है और स्कूल में तो लाइट ही नहीं है। (उस समय स्कूल में बिजली का कनेक्शन नहीं था।) इस पर कक्षा 4 की संता हँसते हुए बोली "सर, तग्या ले आएँगे।" तग्या बागड़ी भाषा का शब्द था, मेरे बागड़ी भाषी नहीं होने के कारण मैं इसे नहीं समझ पाया। बच्चों से पूछने पर उन्होंने बताया कि यह बरसात में उड़ने वाला एक कीड़ा होता है जिसमें से लाइट निकलती है और वह चमकता है। अब मेरी समझ में आ गया था कि बच्चे जुगनू की बात कर रहे हैं। मेरे शब्दकोश में एक नए शब्द 'तग्या' की वृद्धि हुई।

चर्चा अब एक सार्थक मोड़ लेने लगी थी। मैंने बच्चों को बताया कि 'तग्या' को हिंदी में 'जुगनू' कहते हैं। "तभी मैंने उनसे पूछा— पर तग्या का क्या करेंगे?" इस सवाल के जवाब में बच्चों ने कहा "सर, तग्या रात को चमकता और उससे उजाला होता है। इस प्रकार रात में उजाला हो जाएगा और नोतरा कर लेंगे।" मैंने फिर पूछा, "एक जुगनू से कैसे उजाला होगा?"

इस पर दीपक बोला "सर, एक नहीं, हम बहुत सारे तग्या बोतल में भरकर ले आएँगे।"

चर्चा में मजा आ रहा था, तभी अचानक मैंने बच्चों से पूछ लिया, "अच्छा बच्चों बताओ जुगनू कैसे चमकता है?" बच्चे चुप हो गए। तभी मुझे अंदाजा हुआ कि इसका उत्तर तो मुझे भी नहीं आता। यदि बच्चों ने मुझसे पूछ लिया कि जुगनू कैसे चमकता है तो मैं क्या जवाब दूँगा?

तभी भैरू ने कहा कि सर आप ही बताओ।

अपनी अज्ञानता को छुपाने के लिए मैंने बच्चों से कहा, "छुट्टी का समय हो गया है, आप सबको एक काम दे रहा हूँ, सब अपने घर जाकर अपने मम्मी, पापा या बड़ों से पूछकर आएँगे कि जुगनू कैसे चमकता है।"

इस पर विनय बोला— "सर सिंधु (कक्षा 5 की बालिका) पूछकर आएगी।"

मैंने पूछा, "सिंधु क्यों?" इस पर यशोदा बोली, "सर इसके पापा वार्ड पंच हैं।"

मैंने कहा "तो क्या हुआ?"

यशोदा— "जब वे वार्ड पंच हैं तो उन्हें सब आता होगा न।"

यहाँ एक बात पता चली कि बच्चों के मन में भी एक पदानुक्रम होता है। यह परिवेश उनको सिखाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही आता है। बात यहीं खत्म हुई और बच्चों की छुट्टी हो गई। अब मुझे भी यह जानने की उत्सुकता थी कि जुगनू चमकते कैसे हैं। इसके दो कारण थे। एक तो मुझे जुगनू के चमकने के बारे में जानना ही था, दूसरा मैं जानता था कि कल बच्चे मुझसे निश्चित रूप से इस सवाल का जवाब जानना चाहेंगे। बच्चों के साथ होने वाली यह चर्चा मेरे और बच्चों के दोनों के लिए ही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बदल गई थी।

घर पहुँचकर मैंने इस प्रश्न का जवाब ढूँढ़ने का प्रयास किया। कई स्रोतों से जवाब ढूँढ़ने के बाद इसका जवाब गूगल से मिला, मेरे लिए भी यह जानकारी नई थी। इसलिए मैंने एक चार्ट बनाया, उस पर जुगनू का एक चित्र बनाया और निम्नलिखित जानकारी लिखी—

- जुगनू कीटों की श्रेणी में आता है। इसका वैज्ञानिक नाम फ्रोन्टाइनस पायरेलिन्स है। अंग्रेजी में इसे फायर-फ्लाई कहते हैं जिसका अर्थ आग का कीड़ा होता है।
- जुगनू का रंग स्लेटी होता है। इनकी आँखें बड़ी, लेकिन टाँगें छोटी होती हैं। ये अंडे देकर बच्चे पैदा करते हैं। इनका मुख्य भोजन पेड़-पौधों की वनस्पति होती है।
- जुगनू के जिस अंग से प्रकाश निकलता है उस अंग की पीठ पर चमकीली कोशिकाएँ होती हैं, जो एक रिफ्लेक्टर की तरह कार्य करती हैं, जबकि उसके पेट की तरफ दाने होते हैं। इस कीट के पेट की तरफ दानों में श्वास नलियाँ होती हैं। इन्हीं नलिकाओं से प्रकाश निकलता है जो पीठ पर मौजूद चमकीली कोशिका से परावर्तित होता है। इन श्वास नलिकाओं में ल्युसिफेरिन नाम का ज्वलनशील पदार्थ होता है जो ऑक्सीजन के संपर्क में आते ही चमकने लगता है।
- जुगनू की यह रोशनी लगातार नहीं होती है। यह रोशनी 1 सेकंड से भी कम समय तक रहती है लेकिन यह जलती और बुझती रहती है। जुगनू से निकलने वाले प्रकाश का रंग पीला, हरा, लाल हो सकता है।

इस प्रकार, दूसरे दिन इस चार्ट को लेकर मैं स्कूल गया। मुझे और बच्चों को अंतिम कालांश का इंतजार था, बीच में दो-तीन बच्चे आकर शाम के बारे में पूछ चुके थे। अंतिम कालांश में आज हम फिर बैठे। आज अन्य शिक्षक भी हमारे साथ थे।

तभी विनोद ने पूछा "सर हमें जुगनू के बारे में बताइए।"

तब मैंने कहा, "पर यह तो आप सबको मालूम करके आना था।"

गीता— सर मैंने अपनी मम्मी से पूछा था तो उन्होंने कहा,"मुझे नहीं पता अपने सर से पूछना।"

अधिकांश बच्चों के ऐसे ही उत्तर थे।

लेकिन कल चूँकि सिंधु को बच्चों की ओर से पूछकर आने की चुनौती मिली थी इसलिए वह खड़ी हुई और बोली, "सर मेरी दादी ने बताया था कि एक बार जुगनू जंगल में गया था। वहाँ उसकी पूँछ में आग लग गई इसलिए वह चमकता है"। इस पर सारे बच्चे हँसने लगे। बंटी बोला, "जिसकी पूँछ में आग लगी वही जुगनू चमकेगा न, सारे क्यों चमकते हैं"?

वसुंधरा— अरे जुगनू जल नहीं जाएगा क्या?

इस तह इस प्रश्न का जवाब किसी के पास नहीं था। बच्चों के सामने जुगनू से संबंधित जानकारी के चार्ट को लगाया और उस पर उनसे बात की। छोटे बच्चों का तो पता नहीं, लेकिन बड़े बच्चे जुगनू कैसे चमकता है, के कारण को समझ पा रहे थे।

कल हुई बिना किसी उद्देश्य के बात इतनी दूर तक चली जाएगी ऐसा किसी ने सोचा भी नहीं था, लेकिन इससे बातचीत को सीखने की प्रक्रिया में कैसे तब्दील किया जाए, इसकी एक दिशा मिल गई थी। बच्चों के साथ होने वाली इस चर्चा ने सार्थकता पकड़ ली थी। यूँ तो बच्चों के साथ की गई प्रत्येक उन्मुक्त चर्चा उनमें कई तरह के उच्च स्तरीय कौशलों; जैसे— अपनी बात को संदर्भों के अनुसार व्यक्त करना, तर्क करना, निष्कर्ष निकालना, विश्लेषण करना आदि का विकास करती है, लेकिन कभी-कभी बिना छोर वाली यह अनौपचारिक चर्चा पाठ्यपुस्तक से इतर

सीखने-सिखाने के रास्ते भी खोज लेती है। बच्चों के साथ होने वाली यह बात यहीं नहीं रुकी, अपितु आगे भी बढ़ती चली गई।

आज राजेश ने पूछ लिया, "सर बच्चे बोलते कैसे हैं।"

जब मैंने इस बारे में बच्चों से ही पूछा तो प्रत्युत्तर में बच्चों के अलग-अलग जवाब आए; जैसे— मुँह से, जीभ से, होंठ से, दिमाग से।

लेकिन तभी एक बच्चे कालू सिंह ने एक प्रश्न रखा कि विमला (विद्यालय में पढ़ने वाली एक बच्ची, जो ठीक से सुन-बोल नहीं पाती) के तो मुँह, जीभ, होंठ, दिमाग सब है फिर वह क्यों नहीं बोलती।

इस पर कक्षा 2 का वासु बोला, "अरे सर, जब यह छोटी थी न तब हंदेडे (हाथेड़े का गोंद जो हाथेड़ा पेड़ के तनों से निकलता है।) का गोंद खा गई थी तो इसकी जीभ चिपक गई है।" इस पर सारे बच्चे हँसने लगे, तभी कक्षा के एक बच्चे ने समझाया "नहीं ये अंधविश्वास है उसे जरूर कोई शारीरिक तकलीफ रही होगी इस कारणवश वह बोल नहीं पाती।"

बच्चों से बातचीत की यह प्रक्रिया किसी-न-किसी रूप में अनवरत चलती रहती है। कई बार इसमें मोबाइल के वीडियो/ऑडियो कॉल के माध्यम से अन्य विषय विशेषज्ञों/शिक्षक साथियों को जोड़कर बच्चों के साथ चर्चा करवाई जाती है।

बातचीत की यह प्रक्रिया पढ़ने, लिखने, सवालों को पूछने, उनके उत्तर खोजने और उत्तरों की पड़ताल करने तक जारी रहती है।

अंतत: सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि बच्चों से उनकी भाषा में, उनसे चर्चा करते हुए, उनकी राय जानते हुए, उनके विचारों और भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें चर्चा, खोज आदि में सम्मिलित करना प्रत्येक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है, इससे कक्षा के साथ-साथ बाहर भी सीखने-सिखाने का एक रोचक माहौल बनाया जा सकता है।

यदि शिक्षक बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास की ऐसी गतिविधियाँ करें तो बच्चों के परिवेश, भाषा और अनुभवों से जोड़कर एक अधिक प्रभावी और समावेशी शिक्षा प्रदान की जा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की इस विचारधारा को लागू करने के लिए शिक्षकों को बच्चों के साथ बातचीत और उनकी भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे सीखने-सिखाने का एक रोचक और जीवंत माहौल बन सके।

बच्चों के अनुभव को कक्षा की शिक्षण-अधिगम में कैसे उपयोग में लाएँ—

- शिक्षक विषयों की पाठ्यसामग्री, गतिविधियों आदि को विद्यार्थियों के अनुभवों से जोड़ सकते हैं।
- चिंतन और अधिगम को बढ़ावा देने में बच्चों के अनुभव और उनकी बातचीत बहुत महत्वपूर्ण है।
- बच्चों से की गई बातचीत उनके आकलन में बहुत सहायता करेगी। उनसे किया गया संवाद उनकी भावनाओं और विचारों को समझने के लिए भी प्रभावशाली माध्यम है।

निष्कर्ष

बच्चों के साथ संवाद के अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों में जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने के लिए

बातचीत एक महत्वपूर्ण माध्यम है। बच्चों के साथ उनके परिवेश और सोचने की प्रक्रिया से जुड़ी चर्चा उन्हें कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं से जोड़ने के साथ ही पढ़ने-लिखने की ओर अग्रसर करती है। साथ ही इससे बच्चों के अंदर सामुदायिक उत्तरदायित्व की भावना और जिज्ञासा को भी बढ़ावा मिलता है। ऐसी चर्चाएँ न केवल बच्चों को, अपितु शिक्षक को भी नई बातें सीखने का अवसर देती हैं। इस प्रकार की अनौपचारिक चर्चा न केवल बच्चों में तर्क, विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने जैसे उच्च स्तरीय कौशलों का विकास करती है, बल्कि उनके रोजमर्रा के अनुभवों से भी जुड़ी होती है। शिक्षकों के लिए यह जरूरी है कि वे बच्चों के साथ उनकी भाषा और परिवेश से जुड़े मुद्दों पर संवाद करें, जिससे उनमें सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और जीवंत हो सके। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के साथ संवाद और उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करें। इससे कक्षा के भीतर और बाहर एक समृद्ध और आनंददायक शिक्षण वातावरण का निर्माण होगा, जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक होगा।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.